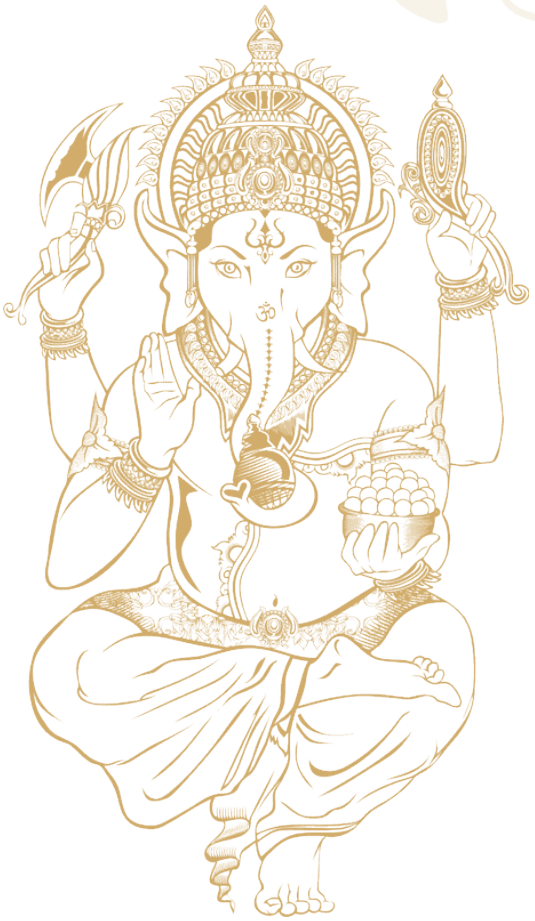

Mr.

15 Apr 2026

09:04 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121936801**

तिथि 15/04/2026 **समय** 09:04:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:33
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:16:07 घं
वेलान्तर	00:00:05 घं
सूर्योदय	05:56:09 घं
सूर्यास्त	18:46:46 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	13
नक्षत्र	पू०भाद्रपद
योग	ब्रह्म
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	दा-दामोदर
पाया(रा.-न.)	ताम्र-लौह
होरा	गुरु
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

गुरु 4वर्ष 4मा 19दि

गुरु

15/04/2026
03/09/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	15/04/2026
चन्द्र	04/05/2027
मंगल	09/04/2028
राहु	03/09/2030

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 1मा 4दि

भ्रामरी

15/04/2026
20/05/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	15/04/2026
संकटा	19/09/2026
मंगला	29/10/2026
पिंगला	19/01/2027
धान्या	20/05/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:10:57	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	---	0:00			
सूर्य			00:57:38	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	उच्च राशि	1.89	कलत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			29:40:43	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	चंद्र	सम राशि	1.31	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	09:55:12	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.27	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			05:47:12	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	नीच राशि	1.31	ज्ञाति	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			22:45:13	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.39	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र			24:46:27	मेष	भरणी	4	शुक्र	बुध	सम राशि	1.29	अमात्य	कलत्र	प्रत्यारि
शनि		अ	13:03:44	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	राहु	सम राशि	1.01	मातृ	आयु	सम्पत
राहु	व		13:53:08	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		13:53:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

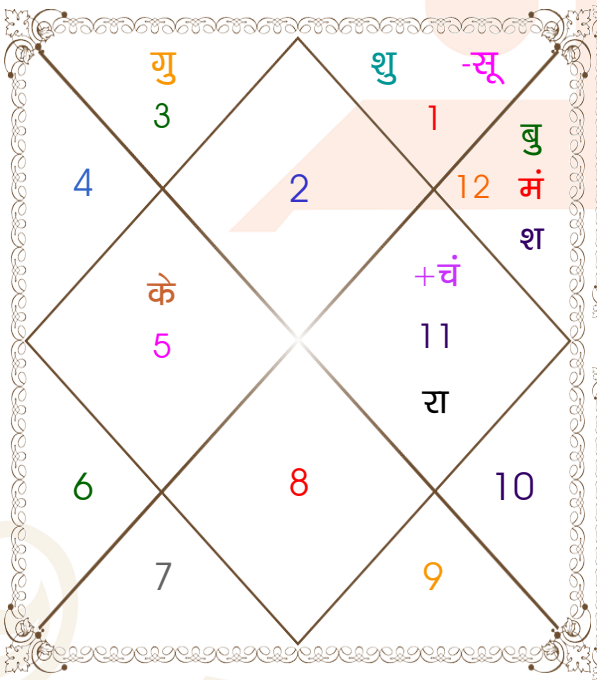

चन्द्र कुंडली

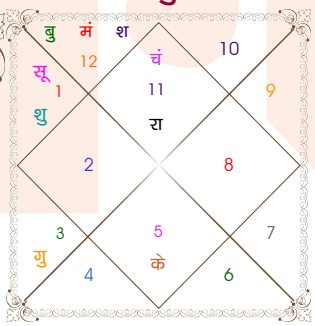

नवमांश कुंडली

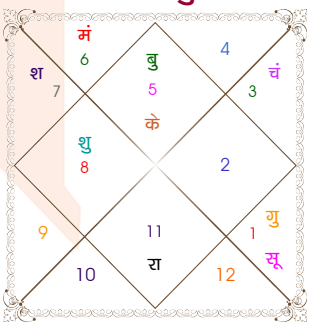

सर्वाष्टकवर्ग

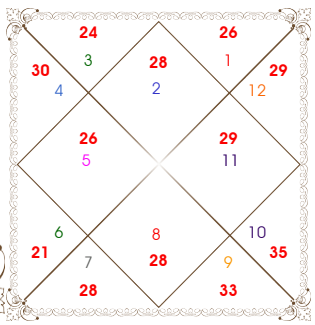

दशमांश कुंडली

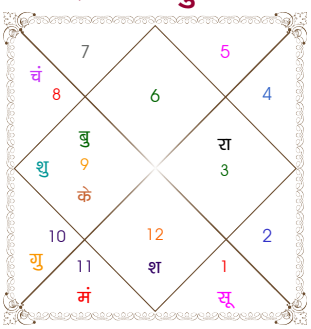

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग सर्प, नाड़ी आद्य, योनि सिंह तथा गण मनुष्य होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भिक अक्षर "द" या "दा" होगा यथा- दारासिंह आदि।

आप एक संयमी पुरूष होंगे तथा समस्त इन्द्रियों को वश में करके संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों तथा कलाओं को सम्पन्न करने में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे एवं कुशलता से इन्हे पूर्ण करेंगे। अतः समाज में आपको आदर सम्मान तथा यश की प्राप्ति होगी एवं अधिकांश लोग आपसे सर्वदा प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आप के शत्रु आपसे हमेशा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे तथा इनको पराजित करने में आपको सफलता मिलती रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे अतः आपका जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आप कभी कभी मानसिक रूप से दुःखी तथा चिन्तित भी रहेंगे। स्त्री के आप पूर्ण नियंत्रण में रहेंगे एवं अधिकांश सांसारिक कार्यों में निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे एवं उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धन सम्पत्ति का आपके पास अभाव नही रहेगा एवं इससे सुसम्पन्न रहकर सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। इसके साथ ही आप एक चतुर तथा विद्वान पुरूष भी होंगे लेकिन आप में कृपणता का भी प्रभाव विद्यमान रहेगा। अतः धन संचय की ओर आपकी विशेष रूचि रहेगी जिससे अन्य लोग कभी कभी आपसे असुविधा की अनुभूति करेंगे एवं आपसे अप्रसन्न होंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आपकी वाणी साहस से परिपूर्ण ओजस्वी रहेगी अतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। परन्तु आपके स्वभाव में दुष्टता का भाव भी रहेगा। साथ ही आप डरपोक भी रहेंगे तथा

अधिकांश रूप से आप भयाक्रान्त रहेंगे लेकिन समाज में अन्य लोगों के साथ आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण एवं मधुर रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

आप एक उच्चकोटि के वक्ता भी होंगे एवं अपने ओजस्वी वक्तव्यों से समाज के सभी वर्गो में अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ रहेंगे। आप विभिन्न प्रकार के सुखसंसाधनों से भी युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करते रहेंगे। आप स्वपरिवार से युक्त रहकर सर्वत्र आदर एवं ख्याति अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। परन्तु आपको नींद अधिक मात्रा में आने से कभी कभी आलस्य की आपमें प्रबलता हो जाएगी इससे आप कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे तथा प्रायः निष्क्रिय से रहेंगे।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

कुम्भ राशि में पैदा होने के कारण आपकी नाक उन्नत होगी तथा मुख एवं ललाट विस्तृता से युक्त रहेंगे। साथ ही हाथ पैर एवं कमर भी स्थूल रहेगी। आपका शरीरिक सौन्दर्य विशेष आकर्षक रहेगा। आप में विद्रोह की भावना भी रहेगी एवं समय समय पर इस का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपके श्रेष्ठ लोग आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही उग्रता एवं क्रोधी प्रवृति से भी

आप युक्त रहेंगे। धर्म के प्रति आपकेमन में श्रद्धा का भपव रहेगा तथा धार्मिक प्रवृतियों के अनुपालन में भी रूचि रहेगी। साथ ही आलस का भी आपके ऊपर प्रभाव रहेगा लेकिन शिल्प या चित्रकारी के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आपको विशेष योग्यता तथा यश की प्राप्ति हो सकेगी। इसके साथ ही यदा कदा आप मानसिक रूप से भी दुःखी रहेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आप विविध प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करेंगे एवं समाज में एक विद्वान के रूप में सम्मान्नित तथा प्रसिद्ध रहेंगे। इसके साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं इनमें निपुणता भी प्राप्त करेंगे। आपका स्वभाव शान्त रहेगा तथा अनावश्यक उग्रता एवं हिंसक प्रवृतियों का आप में सामान्यतया अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल होंगे तथा वे आपसे प्रायः प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से क्रूर कर्मों को करने की ओर भी रूचिशील रहेंगे तथा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इनमें आपका योगदान रहेगा। आप भ्रमणादि तथा यात्रा करने के विशेष शौकीन रहेंगे एवं आपका अधिकांश समय घूमने फिरने तथा यात्रा करने में ही व्यतीत होगा। आपकी दूसरे के धन के प्रति भी लोलुपता की भावना रहेगी एवं इसको प्राप्त करने के लिए हमेशा यत्नशील तथा तत्पर रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति क्षय वृद्धि को प्राप्त होगी एवं इसमें अनेक उतार चढाव आते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन तथा सुगन्धित पुष्पादि के प्रति भी आपके मन में अनुराग रहेगा एवं प्रयत्नपूर्वक इसका उपयोग करेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

समाज में आप एक उत्तम विद्वान के रूप में सम्मानित रहेंगे लेकिन अन्य सज्जन तथा विद्वतजनों को आप उचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रायः विजय एवं सफलता प्राप्त होती रहेगी तथा

आप एक सदाचारी पुरूष भी रहेंगे एवं आपका उत्तम आचरण अन्य लोगों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। धनैश्वर्य से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे गुरूजनों एवं श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा इनका सहयोग करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। महिलावर्ग से भी आपके मधुर सम्बन्ध रहेगे एवं अवसरानुकूल उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा जाति एवं वर्ग के इष्ट कार्य को सम्पन्न करने के लिए आप अपना विशेष सहयोग तथा योगदान प्रदान करेंगे फलतः इनके मध्य आप श्रद्धेय अनुकरणनीय तथा सम्माननीय रहेंगे। इस प्रकार आप कई प्रकार के सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में उनका अनुपालन करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई अधिक रहेगी तथा शरीर की नसें भी शरीर से बाहर स्पष्ट दृष्टिगोचर होगी। इसके अतिरिक्त महिलावर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप एक दानशील पुरूष होंगे तथा जीवन में यथाशक्ति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही आप दूसरे लोगों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगे एवं हृदय से आभार भी प्रकट करेंगे। अतः अपने इन सद्गुणों से आप समाज में सम्मानीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। जीवन में आप विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से भी सुशोभित रहेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी एवं बुद्धि में भी सरलता का भाव रहेगा अतः अन्य जनों से आप सरल स्वभाव से रहेंगे एवं किसी भी प्रकार का छल प्रपंच या धोखा नहीं करेंगे। इस प्रकार अपने मधुर व्यवहार तथा सत्कार्यों से आप समाज के सभी वर्गो में लोकप्रियता अर्जित करेंगे तथा स्वबाहुबल से धनार्जन करके जीवन में सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।

मानसागरी

मनुष्य गण में पैदा होने के कारण आप धार्मिक कृत्यों का अनुपालन करेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा का भाव रहेगा। यदा कदा आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे अतः अन्य लोग आपसे अप्रसन्न होंगे। आप एक दयावान पुरूष होंगे तथा दीन दुःखियों के प्रति आपके मन में विशेष करूणा का भाव रहेगा। साथ ही शारीरिक बल से भी आप युक्त रहेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को करने में भी निपुण रहेंगे। समाज में आप एक विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित रहेंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आपका दर्शनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य कई लोगों का भी आपके द्वारा पालन पोषण होगा तथा वे आपसे सुख भी प्राप्त करेंगे।

समाज में आप सर्वदा आदरणीय रहेंगे तथा धनैश्वर्य से प्रायः युक्त रहेंगे। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होगी तथा निशाने बाजी की कला में आप विशेष रूचिशील तथा ख्याति प्राप्त करेंगे। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण रहेगा एवं नगर वासियों को वश में करने में आप सफल रहेंगे। अर्थात् आप किसी शहर के गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगे एवं नियमपूर्वक धार्मिक कृत्यों का अनुपालन करते रहेंगे। आप हमेशा सत्कार्यों को करने में ही विशेष रूप से रूचिशील दौरान आपकी- इन सत्कार्यों से अन्य सभी सामाजिक लोग भी लाभान्वित होंगे। इस प्रकार अपने सत्कार्यों से आप समाज में आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के सत्वगुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में नित्य इनके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। इसके साथ ही कुल एवं परिवार की उन्नति में अपना विशेष योगदान प्रदान करेंगे। इससे आप परिवारिक जनों के मध्य अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं आदरणीय समझे जाएंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्रमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः

आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र. गण्डयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं तथा अन्य शुभ कार्यों में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए एवं नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना,नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुका आदि सामग्री का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होकर सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।